प्रोटीन की कमी है तो उसका निर्यात क्यों?

भारत डोगरा

वैसे तो देश में पहले भी अधिकांश लोग प्रोटीन की कमी से त्रस्त थे, पर हाल के समय में दालों और दूध की कीमत में आए तेज़ उछाल के साथ ही प्रोटीन की कमी और भी चिंताजनक बन गई है। ऐसे में सरकार द्वारा खली व उससे मिलते-जुलते प्रोटीन के स्रोतों को भारी मात्रा में निर्यात की नीति असहनीय ही है।

तिलहन की विभिन्न फसलों जैसे सरसों, मूंगफली आदि से तेल निकालने के बाद जो खली रह जाती है, उसमें काफी मात्रा में प्रोटीन होता है। इसीलिए डेयरी पशुओं के आहार में खली का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान माना गया है। यदि तिलहन की खली व ऐसी ही गुणवत्ता के पशु आहार दुधारू पशुओं को पर्याप्त मात्रा में मिलें तो अच्छी गुणवत्ता के दूध की उपलब्धि में काफी वृद्धि हो सकती है। पर बहुत समय से सरकारी नीति खली के निर्यात को प्रोत्साहित करने की रही है। इसके लिए सरकार विशेष प्रोत्साहन भी देती है। अब यह निर्यात लगभग 5000 करोड़ रुपए वार्षिक तक पहुंच गया है (वर्ष 2009)।

एक ओर तो हमारे देश के दुधारू पशुओं को खली बहुत कम मिल रही है तथा दूसरी ओर, हम अन्य देशों के पशुओं को बेहतर आहार उपलब्ध करवाने के लिए खली का निर्यात करते रहते हैं। बाद में दूध के पावडर और बटर आइल का आयात करते हैं। इससे हमारे करोड़ों पशुपालकों की आजीविका पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

इस तरह की विसंगति उत्पन्न होने का एक कारण यह भी है कि गांवों में कुटीर उद्योग के रूप में लगे हुए कोल्हू खत्म होते गए। जब गांव में ही तिलहन से तेल निकलता था, तो खली गांव में उपलब्ध रहती थी पर जैसे ही तेल निकालने काम बड़ी शहरी इकाइयों में गया, खली एक व्यापारिक वस्तु बन गई। अब जहां उसकी सबसे अधिक कीमत मिली निर्यात बाज़ार में वहीं उसे बेच दिया गया।

हमारे देश के पशुपालकों को पर्याप्त खली उपलब्ध होती रहे, इसके लिए खली का निर्यात रोकने का निर्णय लेना चाहिए। ऐसे निर्यात के लिए कोई सरकारी सहायता तो कतई नहीं मिलनी चाहिए क्योंकि यह निर्यात राष्ट्रीय हित में नहीं है। पर इस निर्णय के साथ यह भी ज़रूरी है कि देश में तिलहन से तेल निकालने के कुटीर उद्योग को नए सिरे से प्रोत्साहित किया जाए।

इस तरह के कुटीर उद्योगों के लुप्त होने के दुष्परिणाम धीरे-धीरे सामने आ रहे हैं। गांवों में आज भी तेली परिवारों के यहां बेकार पड़े कोल्हू उनकी लुप्त हुई आजीविका की याद दिलाते हैं। इस तरह लाखों लोगों की आजीविका छिन गई है। कोल्हू से शुद्ध तेल मिलता था। उसमें कई औषधीय गुण होते थे। यह अब दुर्लभ हो गया है। वैसी गुणवत्ता के तेल के लिए जानकार लोग बहुत खर्चने को तैयार हों, तो भी वह तेल नहीं मिलता, क्योंकि गांव के कुटीर स्तर के तेली ही नहीं रहे। इस तरह गांववासियों और पशुपालकों को जो खली पहले सहज अपने घर के पास की उपलब्ध हो जाती थी, वह अब दुर्लभ हो गई है। उसे महंगे दाम देकर बाज़ार से खरीदना पड़ता है और दुधारू पशु खली से वंचित रह जाते हैं।

अतः खली का निर्यात रोकने के साथ तेल निकालने के कुटीर उद्योग को भी नया जीवन देने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***